आजीवक दर्शन के अन्तिम श्रेष्ठ तीर्थंकर मक्खलि गोसाल एवं उनका प्रभाव क्षेत्र

डॉ0 यशवन्त वीरोदय,

हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ

छठी शताब्दी इसा पूर्व के उत्तरार्ध का दौर एक विशाल वैचारिक–साँस्कृतिक धरोहर के साथ विश्व में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज कराता नज़र आता है। यदि इतिहास, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं भाषा की दृष्टि से सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप का अध्ययन किया जाय तो ऐसा लगता है कि 'इण्डोलाजी' के क्षेत्र में इससे समृद्ध कोई दूसरा काल नहीं है और धर्म चिंतन से बड़ा कोई दूसरा चिंतन नही। यह वही दौर है जब वैदिक आर्य धर्म–संस्कृति के मुकाबले भारत में मक्खलि गोसाल के नेतृत्व में आजीवक धर्म, महावीर स्वामी के नेतृत्व में जैन धर्म एवं गौतम बुद्ध के नेतृत्व में बौद्ध धर्म का अभ्दुय एवं विस्तार होता है और वैश्विक क्षितिज पर कन्फ्यूसियस के नेतृत्व में 'चीन', जरथूस्ट के नेतृत्व में 'इरान', पाइथागोरस के नेतृत्व में 'यूनान' अपनी परंपरागत जड़ता को तोड़ते हुए नई दार्शनिक ऊँचाइयों को प्राप्त करता है।

यह वही समय है जब भारत में एक साथ कई धर्मों की उपस्थिति दर्ज होती है। एस0के0 पाण्डेय के अनुसार इस समय 'बौद्ध ग्रंथ' ब्रहमजाल सूत्र' से 62 और जैन ग्रंथ 'सूत्र कृतांग से 368 धर्मों के अस्तित्व''[1] की सूचना मिलती है। प्राचीन भारत के सारे अध्येताओं, शोधकर्ताओं और पुरातत्व विदों की यह बड़ी कमजोरी रही कि वे इनमें से मुख्यतः वैदिक ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्म पर ही ज्यादे प्रामाणिक सामग्री जुटा पाये। जिसके कारण अन्य धर्मों के बारे में लोगों को अप्रमाणिक एवं सूचनात्मक जानकारी ही उपलब्ध हो सकी, जिसका परिणाम यह हुआ कि इन तीनों धर्मों के विरोध में खड़े हुए तमाम विलुप्त धर्मों में से केवल 'एक विलुप्त भारतीय धर्म'[2] के रूप में एकमात्र ए0एल0 वाशम ही 'आजीवक धर्म' की आंशिक शिनाख्त कर पाये और 'एक अस्वीकृत तीर्थंकर'[3] के रूप में एकमात्र आचार्य रजनीश 'ओशो' ही 'मक्खलि गोसाल' को पहचान सके। जबकि यह उस समय का पूरा सच नहीं था। यह आधा अधूरा सच था। ए0एल0 बाशम जिस आजीवक धर्म को 'एक विलुप्त भारतीय धर्म' बता रहे थे, वह पूरे भारत में फैला हुआ सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सर्वाधिक अनुयायियों वाला धर्म था। आचार्य रजनीश 'ओशो' जिस 'मक्खलि गोसाल' को 'एक अस्वीकृत तीर्थंकर' बता रहे थे, वे दलित बहुजन समाज द्वारा स्वीकृत एवं सर्वाधिक लोकप्रिय अंतिम श्रेष्ठ तीर्थंकर (चरिमे तित्थगरे[4]) थे। सही मायने में देखा जाय तो वह पूरा समय और समाज भारतीय इतिहास में मक्खलि गोसाल और उनके अनुयायियों का था। धर्म, समाज एवं संस्कृति से संबंधित उस दौर की सारी बहसें, विचार एवं सारा चिंतन मक्खलि गोसाल द्वारा ही खड़ा किया गया था, जिसपर आगे चलकर अपने–अपने ढंग से महावीर स्वामी एवं गौतम बुद्ध ने विचार किया। जिसका प्रमाण आजीवक चिंतक डॉ0 धर्मवीर द्वारा सृजित ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित वह ग्रंथ है जिसका शीर्षक है– 'महान आजीवक : कबीर रैदास और गोसाल'।[5] इस पुस्तक में पहली बार स्वतंत्र दृष्टि से, बिना किसी वाह्य प्रभाव के, आजीक धर्म–दर्शन एवं संस्कृति

के इतिहास, वर्तमान एवं भविष्य पर, अब तक आरोपित नकारात्मक दृष्टि को दरकिनार करते हुए सकारात्मक दृष्टि से विचार किया गया है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि गौतम बुद्ध एवं महावीर के समकालीन दार्शनिकों में 'मक्खलि गोसाल' सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक थे, और उम्र में भी वे गौतम बुद्ध एवं महावीर से बड़े थे। इतना ही नहीं आचार्य महाप्रज्ञ ने भगवती सूत्र के हवाले से यह तथ्य उद्घाटित किया है कि–

''उस युग में भी जब स्वयं तीर्थंकर विद्यमान थे, ... भगवान महावीर के अनुयायियों की संख्या केवल एक लाख उनसठ हजार (1,59,000) थी, जबकि गोशालक के अनुयायी ग्यारह लाख इकसठ हजार (11,61,000) थे''[6] भगवती सूत्र के हिन्दी भाष्यकार आचार्य महाप्रज्ञ ने भी यह माना कि आजीव सिद्धान्त पर अबतक जो अनुसंधान कार्य होना चाहिए था वह नहीं हुआ। वे इस विषय पर निष्पक्ष अनुसंधान कार्य की अनिवार्यता को रेखांकित करते हुए लिखते हैं कि :–

''गोशाल के जीवन एवं आजीवकों के सिद्धान्त के विषय में और अधिक निष्पक्ष, पूर्वाग्रह रहित एवं सर्वांगीण अनुशीलन, चिन्तन एवं अनुसंधान की अपेक्षा है, जिससे ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सके''[7]

अब वह समय आ गया है कि आचार्य महाप्रज्ञ की इस चुनौति को स्वीकार करते हुए मक्खलि गोसाल एवं उनके द्वारा प्रस्तुत आजीवक धर्म दर्शन एवं संस्कृति पर विचार करते हुए ऐतिहासिक दृष्टि से किसी महत्वपूर्ण निष्कर्ष या निर्णय पर पहुँचा जाए। इस संबंध में डॉ0 धर्मवीर ने, डॉ0 हरिपाद चक्रवर्ती की पुस्तक 'ऐसिटिसिज्म इन एनशिएन्ट इण्डिया इन ब्राह्मनिकल, बुद्धिस्ट, जैन एण्ड आजीवक सोसायटीज (फ्रोम दि अर्लियस्ट टाइम दु दि पीरियड ऑफ शंकराचार्य) के हवाले से कुछ विशेष तथ्यों पर प्रकाश डाला है–

1– गोसाल का उनके जीवन काल में बहुत बड़ा नाम हो गया था। बुद्ध ने महावीर की तुलना में गोसाल को खतरनाक बताया था।[8]

"Gosala's fame as the leader of the Ajivikas is also indicated by the Anguttara wherein Buddha's scathing remark about Makkhali suggests that Gosala was his more dangerous rival than even Mahavira"[9]

2– गोसाल की मृत्य के बाद आजीवक धर्म का क्या हुआ? भगवती सूत्र में महापद्म नंद का जिक्र बताता है कि उस ने आजीवक संघ को सहारा दिया था। कहा जाता है कि अंतिम नंद वंश के सम्राट के हाथों से चाणक्य, आजीवक साधू का वेश धारण करके बच निकला था। इस का मतलब यह है कि नंद वंश के समय में आजीवकों को उच्च स्थान प्राप्त था।[10]

Now to enquire into the position of Ajivkism in India after the death of Gosala. The reference to Mahapadma Nanda in the Bhag. Sutra suggest that he supported the Ajivika Sangha. Chanakya is said to have escaped the hands of the last Nanda in the guise of a naked Ajivika monk and if it is believed to be true, the Ajivikas gained superior status in the period of the Nandas, at least in Magadha.[11]

3–अशोक द्वारा आजीवकों को दी गईं गुहाओं और अशोक के उत्तराधिकारी दशरथ द्वारा उन्हें बराबर और नागार्जुनी गुहाओं के दान से राजकुल में आजीवकों के सम्मान का पता चलता है। दशरथ द्वारा वहियका, गोपिका और वड़थिका गुहाएं भी आजीवकों को दी गई थीं। इन गुहाओं की सुन्दर कलात्मकता से उस समय आजीवकों को मिलने वाले विशेष दर्जे का पता चलता है[12]

The status of the Ajivikas in Magadha is proved by the inscriptions of Asoka and his successor Dasaratha in the Barabar and Nagarjuni caves respectively-whereby the caves were dedicated to them. The Vahiyaka cave

(Kubha) was presented by the beloved of the gods, Dasaratha to the Ajivika monks. The Gopika and Vadathika caves were also given to them by Dasaratha. These caves with fine craftsmanship show the special honour, given to the Ajivikas at that time.[13]

4–गोसाल द्वारा अपनी बीमारी के समय उपदेशित आठ चरिमों में 'चरिमे सेयणए गंध हत्थी' एक चरम है। लोमस ऋषि गुहा में प्रवेश द्वार के ऊपर हाथियों की पंक्ति खुदी है। इस का मतलब है कि हाथियों का यह आजीवक प्रतीक अशोक के तुरन्त बाद आजीवक धर्म के संरक्षकों द्वारा बनाया गया होगा। ये गुहाएं बताती हैं कि दशरथ ने आजीवक धर्म की कितनी मदद की होगी। यही वजह हो सकती है कि जलत खोरे बौद्ध और जैनियों ने राजाओं की सूचि में दशरथ का नाम नहीं दिया है।[14]

It is a well-known fact that "the Last Sprinkling Elephant" was one of the eight finalities, preached by Gosala in his last illness. It is interesting to note that the facade of the Lomasa Rsi cave which shows the row of elephants above its entrance, the Ajivika symbols was most probably built by the patron of the Ajivakas, shortly after Asoka. These caves show how Dasaratha granted favour to this sect; and so it is very likely that his name has been omitted from the lists of kings, given by both the Buddhists and the Jainas.[15]

दिव्यावदान के प्रमाण से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के बेटे राजा बिन्दुसार के निजी दरबार में एक 'आजीवक परिब्राजक धर्म गुरू थे जिनसे वे सलाह लेते थे। जहाँ तक महान सम्राट अशोक की बात है तो दिल्ली–टोपरे का सातवाँ स्तम्भ लेख जो अशोक के राज्याभिषेक के 27 वर्ष बाद लिखवाया गया था, उसमें स्पष्ट उल्लेख है कि देवताओं के प्रिय प्रियदर्शी अशोक ने सभी संप्रदायों में अपने धर्म महामात्र नियुक्त किए हैं, ये धर्म महामात्र 'आजीवकों में' तथा अन्य विविध संप्रदायों के बीच नियुक्त किए गए हैं। धर्ममहामात्र अपने कार्य के अलावा अन्य सब संप्रदायों का निरीक्षण भी करते हैं।

1– बिहार में गया के पास बराबर की पहाड़ियों में मिले 'प्रथम गृहालेख' में स्पष्ट उल्लेख है कि :–

राजा प्रियदर्शी ने राज्यभिषेक के 12 वर्ष बाद न्यग्रोध गुफा आजीवकों को दी।

2– द्वितीय गुहालेख में उल्लेख है कि–

''राजा प्रियदर्शी ने राज्याभिषेक के 12 वर्ष बाद स्खलतिक पर्वत पर यह गुफा आजीवकों को दी।

3–तृतीय गुहालेख में उल्लेख है कि–

''राजा प्रियदर्शी ने राज्यभिषेक के 19 वर्ष बाद सुंदर स्खलतिक पर्वत पर यह गुफा वर्षाकाल में आजीवकों को दी[16]

इतना ही नहीं चक्रवर्ती सम्राट अशोक के पोते राजा दशरथ ने भी तीन गुहाएं आजीवकों को दान में दी थीं। ओम प्रकाश प्रसाद ने इस संबंध में बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी दी है :–

1– देवताओं के प्रिय दशरथ ने राज्यभिषेक के बाद ही वहियका गुहा भदंत आजीवकों को जब तक सूर्य चंद्रमा स्थित हैं तबतक निवास करने के लिए दी।

2– देवताओं के प्रिय दशरथ ने राज्यभिषेक के अनंतर ही गोपिका गुहा भदंत आजीवकों को जब तक सूर्य चंद्रमा हैं तब तक निवास करने के लिए दी।

3– देवताओं के प्रिय दशरथ ने राज्यभिषेक के अनंतर बडथिका गुहा भदंत आजीवकों को जबतक सूर्य चंद्रमा हैं तब तक निवास करने के लिए दी''[17]

इन प्रमाणिक साक्ष्यों के आलोक में डॉ0 धर्मवीर ने आजीवक धर्म' के संबंध में प्रस्तुत ए0एल0 बाशम की 'एक विलुप्त भारतीय धर्म' की संज्ञा को प्रश्नांकित कर दिया और आजीवकों के इतिहास पर महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को उद्घाटित किया है :–

- *''डॉ0 ए0एल0 बाशम ने आजीवक धर्म को भारत का लुप्त हुआ धर्म कहा है। इसके उत्तर में हम यह जान पाये हैं कि यह लुप्त नहीं हुआ बल्कि भारत के मध्यकालीन इतिहास में रैदास और कबीर की वाणी में अपने पूरे चरम पर जीवित रहा है।*
- *यह धर्म हारा हुआ नहीं रहा है। मक्खलि गोसाल के समय में यह जैन धर्म और बौद्ध धर्म से जीता हुआ था।*
- *इसके बाद पूरे नंद वंश काल में धर्म के क्षेत्र में इसी का राज रहा था।*
- *मौर्यकाल में बिन्दुसार के समय में इस का पूरा बोल–बाला था और अशोक ने इसे गुफाएं दान में दी थी। अशोक के पोते दशरथ पर भी इसका बड़ा प्रभाव था.....*
- *इसाकी चौदहवीं सदी तक दक्षिण भारत में इसकी मौजूदगी के चिह्न मिलते हैं।*[18]
- *अशोक आजीवक धर्म के अनुयायी थे बौद्ध धर्म के नहीं, आजीवक धर्म के अनुयायी के रूप में उन्होंने विजय प्राप्त की थीं, जिन में कलिंग विजय भी शामिल है। कलिंग विजय वैसी ही विकराल और भयंकर थी, जैसे इब्राहिम के खिलाफ बाबर की पानीपत फतह थी। बाबर इस्लाम के अनुयायी थे और उन्होंने उसे गर्वीली विजय बना दिया।*
- *अशोक आजीवक धर्म के अनुयायी थे और उन्होंने उसे अपनी लज्जाजनक विजय मान लिया।*
- *बाबर को बहकाने के लिए कोई हिन्दू सन्यासी सामने नहीं आ सकता था लेकिन अशोक ने मार्गच्युत होने के लिए बौद्ध भिक्षुओं को अवसर दे दिया।*
- *कलिंग युद्ध के बाद यदि अशोक को बौद्ध भिक्षु बहकाने में सफल न होते तो आज तक भारत का राजनैतिक इतिहास कुछ और होता।*[19]

यहाँ इस संबंध में 'मक्खलि गोसाल' के आठ चरमों में से सातवें चरम 'चरिमें महासिला कंटक संगामे' (चरम महाशिला कंटक संग्राम) का उल्लेख करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण इसलिए है कि इसी सातवें चरम से प्रभावित होकर सम्राट अशोक ने कलिंग विजय प्राप्त की थी। महाशिला कंटक संग्राम अपने आप में एक चरमयुद्ध का स्वरूप है। अर्थात अगर आज आप अपने जीवन में युद्ध करते हों तो वह युद्ध साधारण स्तर का नहीं होना चाहिए। वह युद्ध ऐसा होना चाहिए जैसे कि वह आपकी जिंदगी का अंतिम श्रेष्ठ युद्ध हो। ऐसा युद्ध न पहले कभी हुआ हो न ही भविष्य में होने की संभावना हो। मक्खलि गोसाल के इसी चरम महाशिला कंटक संग्राम से प्रभावित होकर आजीवक धर्म के अनुयायी चण्ड अशोक ने कलिंग की महान और भयंकर विजय हासिल की थी। कलिंग का युद्ध सम्राट अशोक की जिंदगी का अंतिम श्रेष्ठ युद्ध था, सही मायने में देखा जाय तो यदि कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म न ग्रहण किया होता तो आज भारत का इतिहास कुछ और होता।

संदर्भ

1– एस0के0 पाण्डेय, प्राचीन भारत, इलाहाबाद प्रकाशन, 2009, पृ0–201

2– History and doctrines of the Ajivikas, a vanished Indian Religion- motilal Banarsidass Publication-1981 |

3– ओशो, जिन सूत्र, भाग–चार, दिव्यांश पब्लिकेशन, एम0सी0आई0–222, फेज–1, एल0डी0ए0 टिकैतराय कालोनी, लखनऊ उ0प्र0 226017 प्रथम संस्करण–2013 पृ0–93–112

4– भगवई : विआहपण्णत्ती : खण्ड–4, संपादक और भाष्कार आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं राजस्थान–341306, प्रथम संस्करण, अक्टूबर 2007, पृ0–300

5– डॉ0 धर्मवीर महान आजीवक : कबीर रैदास और गोसाल, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, सं0–2017

6– डॉ0 धर्मवीर महान आजीवक : कबीर रैदास और गोसाल, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, सं0–2017, पृ0–37 (भगवई : विआहपण्णत्ती : खण्ड–4, संपादक और भाष्कार आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं राजस्थान–341306, प्रथम संस्करण, अक्टूबर 2007, पृ0–313)

7– वही पृ0–313

8– डॉ0 धर्मवीर महान आजीवक : कबीर रैदास और गोसाल, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, सं0–2017, पृ0–41

9– Asceticism in Ancient India in Brahmanical, Buddhist, Jain and Ajivika Societies, [from the earlist times to the period of Sankaracharya], Haripad Chakraborti, Punthi Pustak, 136/4B, Bidhan Sarani, Calcutta-700004, Reprint, 1993, p. 452

10– डॉ0 धर्मवीर महान आजीवक : कबीर रैदास और गोसाल, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, सं0–2017, पृ0–41

11– Asceticism in Ancient India in Brahmanical, Buddhist, Jain and Ajivika Societies, [from the earlist times to the period of Sankaracharya], Haripad Chakraborti, Punthi Pustak, 136/4B, Bidhan Sarani, Calcutta-700004, Reprint, 1993, p. 463

12– डॉ0 धर्मवीर महान आजीवक : कबीर रैदास और गोसाल, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, सं0–2017, पृ0–41–42

13– Asceticism in Ancient India in Brahmanical, Buddhist, Jain and Ajivika Societies, [from the earlist times to the period of Sankaracharya], Haripad Chakraborti, Punthi Pustak, 136/4B, Bidhan Sarani, Calcutta-700004, Reprint, 1993, p. 464

14– डॉ0 धर्मवीर महान आजीवक : कबीर रैदास और गोसाल, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, सं0–2017, पृ0–42

15– Asceticism in Ancient India in Brahmanical, Buddhist, Jain and Ajivika Societies, [from the earlist times to the period of Sankaracharya], Haripad Chakraborti, Punthi Pustak, 136/4B, Bidhan Sarani, Calcutta-700004, Reprint, 1993, p. 464

16– अशोक के धर्मलेख, संपदाक, जनार्दन भट्ट, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पटियाला हाउस, नई दिल्ली,–110001, द्वितीय संस्करण–2000 पृ0–83–84

17– ओमप्रकाश प्रसाद, संघाधिपति अशोक, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय बैठक नं0–2, केवेलटी लाइन, दिल्ली–110007, प्रथम संस्करण–1999 पृ0–140

18– डॉ0 धर्मवीर महान आजीवक : कबीर रैदास और गोसाल, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, सं0–2017, पृ0–221

19– डॉ0 धर्मवीर, 'हिन्दुस्तान के एक और बेटी की आत्मकथा, बहुरि नहिं आवना : अक्टूबर–दिसम्बर 2010 पृ0–16

Copyright © 2018, Dr.Yashvant Veeroday. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.